पैदावार बढ़ानेकी बातें

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ | सम्पादक – प्यारेलाल | अंक १४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ४ मओी, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

शिक्षकोंसे

[ता० १७–४–'४७ को बारडोलीके स्वराज-आश्रममें शामकी प्रार्थनाके बाद सरदार श्री वल्लभभाओी पटेलने शिक्षक भाओी-बहनोंके सामने जो तक़रीर की थी, अुसे नीचे दिया जाता है। —संपादक]

अगर हवा ठीक होती, और मैदानमें प्रार्थना हुओी होती, तो वहाँ बैठकर दो शब्द कहना ज़्यादा अच्छा लगता। मगर मैं देखता हूँ कि दोनों बाजूके बरण्डे भरे हुओे हैं और बहुतसे भाओी-बहन यहाँ बैठे हैं। मुझे तो शक हुआ कि यह मकान अितने लोगोंका बोझ अुठाने लायक़ मज़बूत है भी या नहीं! मगर मुझे आप सबके चेहरे नहीं दीखते, अिसलिअे जिनसे मुझे बात करनी है, अुनपर मेरे कहनेका कुछ असर होता है या नहीं, या मेरी बात अुन्हें पसन्द आओी या नहीं, और अिसे मैं अुनके चेहरोंसे भाँप सकता हूँ या नहीं, मेरे बोलनेसे कुछ फ़ायदा भी हुआ है या नहीं, यह सब जाने बिना मैं अपनी बात आपके दिलोंमें कैसे अुतार सकता हूँ? यह सब होते हुओे भी हम यहीं अिकट्ठा हुओे हैं। आपने और कल्याणजी भाओीने मुझे बतलाया कि कओी शिक्षक और शिक्षिकाअें यहाँ तालीम हासिल करनेके लिअे आये हुओे हैं। तो ठीक है; दो शब्द कहता हूँ।

कुछ दिनों पहले मैं बोचासण आश्रममें गया था। वहाँ भी शिक्षकोंकी ट्रेनिंग-क्लास चलती थी। वहाँ अेक बड़ी स्कूल भी है, जिसमें कुछ विद्यार्थी (तालिब-अिल्म) पढ़ते हैं। यह आश्रम अेक अलग ढंगका है। बोचासणका अपने अलग ढंगका और वेडछीका आश्रम दोनोंसे अलग तरीक़ेका है। सब आश्रम अपने-अपने ढंगके हैं। मगर जहाँ तक मैं समझता हूँ, अिन सब आश्रमोंमें अेक ही सामान्य बात सिखाओी जाती है; और वह है — समाज-सेवा करना। यहाँ जो शिक्षक भाओी-बहन आये हुओे हैं, अुनसे मुझे कोओी खास बात नहीं कहनी थी, मगर भाओी कल्याणजीने मुझे जो बात कही, अुसपरसे दो शब्द कहता हूँ; जिसे आप सब समझ लेंगे।

बम्बअी-सरकारने यह तय किया है कि शिक्षक-शिक्षिकाओंकी तालीमका कोर्स तीन महीनेका रक्खा जाय। अिसका मतलब यह हुआ कि तालीमका जो तरीक़ा अभी तक चलता आया है, अुसमें सरकारको कुछ फेरफार करना है। और अगर कोओी फेरफार करना हो, तो आज विद्यार्थियोंको क़ौमी तालीम देना सबसे ज़्यादा ज़रूरी हो गया है। अिसलिअे सबसे पहले शिक्षकोंको विद्यार्थी बननेकी ज़रूरत है। दूसरे विषयोंकी बात चाहे छोड़ भी दें, मगर अेक विषयकी तालीम तो अुन्हें लेनी ही चाहिये। अुस विषयकी तालीम अगर न ली हो, तो काम ही न चले; और वह विषय है — अुद्योग। शिक्षकोंको अुद्योगकी तालीम लेनी ही चाहिये। मगर जो बात मैं शिक्षकोंसे कहना चाहता हूँ, वह दूसरी ही है। आप जानते हैं कि बम्बअी सरकारने — मौजूदा वज़ारतने — बड़े टेढ़े वक़्तपर सूबेकी हुकूमत अपने हाथमें ली थी। हमने मरकज़की हुकूमत सम्हाली, तब अिससे भी ज़्यादा टेढ़ी परिस्थिति थी। १६ अगस्तसे कलकत्तामें ज़बरदस्त खूँरेज़ी शुरू हुओी। अुसके बाद दूसरी सितम्बरको हम लोगोंने मरकज़की हुकूमत सम्हाली। अिसके बाद भी कलकत्तामें खूब खूँरेज़ी हुओी। सारे देशमें वैरभाव फैल गया था। बम्बअी सरकारने हुकूमत सम्हाली, अुससे पहले ही शिक्षक-शिक्षिकाओंने अेक क़िस्मकी फ़िज़ा पैदा कर दी थी और हड़ताल करनेकी धमकी दे रहे थे। अेकाध शिक्षकने मेरी सलाह माँगी। अुन्होंने मुझे खत लिखा और रहनुमाओी करनेके लिअे भी कहा। मैंने सलाह दी कि जब प्रजाके नुमाअिन्दे सूबेकी हुकूमत अपने हाथमें लेनेवाले हैं, तभी आपने हड़ताल करनेका मुहूर्त पसन्द किया। आपके लिअे यह कोओी समझदारीकी बात नहीं है। अिसलिअे मेरी सलाह है कि आप लोग रुक जाअिये। अेक महीनेमें आपपर कोओी भारी दुःख नहीं आ पड़ेगा। मेरा यह खत किसीने अखबारोंमें छपवाया भी था। शिक्षकोंको मेरी यह सलाह अुलटी लगी। वे मानें, तो मैंने अुन्हें अुलटी नहीं बल्कि ठीक सलाह दी थी। अुसके बाद प्रजाके वज़ीर आये और अुनसे जो बना, सो अुन्होंने किया। अुन्होंने आप लोगोंको सन्तुष्ट करनेकी कोशिश की। आपकी तनख़्वाह थोड़ी-बहुत बढ़ी होगी। मगर मैं पूछता हूँ कि आपके दरजेमें भी कोओी फेरफार हुआ?

मैं आपसे पूछता हूँ कि शिक्षकोंका समाजमें जो दरजा है, अुसमें कोओी फेरफार हुआ? अिस तरह तो मज़दूर भी हड़ताल करके मज़दूरी बढ़वा लेते हैं। पहले हिन्दू समाजमें गुरू और मुसलमानोंमें मौलवी तालीम दिया करते थे। अिन लोगोंका जो दरजा था, वह आपका है? न, नहीं है। गाँवमें शिक्षकका जो मान होना चाहिये, वह आज नहीं है। यह हो, तो आपको अिन झगड़ोंमें ही न पड़ना पड़े। क्योंकि हम जानते हैं कि अुनकी आमदनी तो मामूली थी, मगर मान-मरतबा ज़्यादा था। ओटलेपर बैठकर वे लोग पढ़ाते थे। अेकादसी बीतनेपर बारसके दिन शिक्षकके घर सीधा-सामान भेजा जाता था, जिसमें घी, आटा, दाल, चावल ये सब चीज़ें होती थीं और वे भी शिक्षकके सारे परिवारके लिअे बस हों, अितनी। अितना सामान सिर्फ़ अेक ही विद्यार्थीके घरसे नहीं, क़रीब-क़रीब सभी विद्यार्थियोंके घरसे आता था। विद्यार्थीके घर कोओी विवाह-शादी वग़ैरा होते, तब भी शिक्षकोंको दिया जाता। अुनको कहीं माँगने नहीं जाना पड़ता था।

जिस तरह मज़दूर लोग हड़ताल करके दो-चार रुपये बढ़वा लेते हैं, अुसी तरह आप भी ले सकते हैं। यह तो यों हुआ, मानो आप भी किसी कारखानेमें पड़े काम करते हों। क्या आप लोग अिसी क़िस्मके शिक्षक बनना चाहते हैं? आप अिस आश्रममें आये हैं, तो सिर्फ़ तीन महीनेके अिस क्लासमें अुद्योगकी भला कितनी तालीम ले लेते होंगे? सूत कातनाभर आ जानेसे काम नहीं चल सकता। आश्रममें अगर कुछ सीखनेकी बात है, तो वह समाज-सेवाका काम है। अिसके सिवा आप यहाँ अपने दिलकी सफ़ाओी कर सकते हैं — अुसे पाक बना सकते हैं। यह चीज़ आप यहाँसे हासिल कर सकते हैं। समाजमें आपका स्थान जैसा होना चाहिये, वैसा बनानेकी आपको कोशिश करनी चाहिये। गाँवमें आपका जो दरजा पहले था, अुसे आपको फिरसे हासिल करना चाहिये। पहले

www.vinoba.in

गाँवके किसी भी सवालमें कोअी अुलझन खड़ी होती, तो अुसे सुलझानेमें शिक्षककी सलाह ली जाती थी। कोअी खटपटका काम होता, तो सरकारी मोहर्रिरकी और रिश्वत वग़ैराका काम होता, तो मुखियाकी सलाह ली जाती थी। अिस तरह ये तीन आदमी गाँवके मालिक थे। अिनमें भी शिक्षकका सच्चा बड़प्पन, मान व अिज्ज़त थी।

आप बुरा न मानें, तो मैं कहूँगा कि आज शिक्षकोंमें पढ़ानेकी वृत्ति या ज़हनियत नहीं है। वे बेगारियोंकी तरह काम करते हैं, बेगार टालते हैं। अिसका यह मतलब नहीं कि सभी शिक्षक अैसा करते हैं।

निर्माणकी कुंजी

मगर समाज आपसे अूबा हुआ है। दो महीने आप काम न करें — हड़ताल कर दें — तो लोग आपको गालियाँ देंगे। वे जानते हैं कि अैसा करनेसे अब कोअी फ़ायदा नहीं। लोगोंको शिक्षककी परवाह नहीं है। यह सब जो हो गया है, वह आज़ाद हिन्दुस्तानमें न होना चाहिये। अिस आज़ाद हिन्दुस्तानके निर्माणकी चाबी आपके हाथमें है; क्योंकि सारे काम नये सिरेसे करने हैं। आज तक यह गुलामीकी चाबी थी। अब आज़ाद हिन्दुस्तानके अनुकूल चाबी आपको हासिल करनी है। आपको अैसे बरतना है, जिससे समाजमें आपका दरजा बढ़े, अिज़्ज़त बढ़े। गाँवके सुख-दुःखमें आपको हिस्सा लेना चाहिये। गाँवके हरअेक आदमीकी आपको पहचान होनी चाहिये। विद्यार्थीके माँ-बाप कौन हैं, लड़कोंके माँ-बाप कौन हैं, यह सब आपकी नज़रमें रहना चाहिये। स्कूलमें बच्चोंको दो-चार घण्टे पढ़ा देनेसे ही आपका फ़र्ज़ पूरा नहीं हो जाता। यह तो मैंने कहा, वैसा ही हुआ कि मज़दूर लोग कारखानेमें आठ घण्टे काम करते हैं, और आप पाँच घण्टे। कारखानेमें जमादार हाज़िरी लेने आता है, आपके यहाँ भी कभी-कभी अिन्स्पेक्टर आते हैं। और वे भी आप लोगोंमेंसे ही होते हैं। मैं अपने आँख-कान खुले रखकर घूमता हूँ, अिसलिअे मुझे सारी खबरें मिल जाती हैं। मज़दूर तो कारखाना बन्द करके चौबीस या अड़तालीस घण्टोंमें अपना फ़ैसला करवा सकता है, मगर आपकी समाजको दरकार नहीं है।

अिसलिअे कुछ समाजके दबावसे आपकी तनख़्वाह नहीं बढ़ी। समाज तो बेपरवाह है। अुसे आपकी कोअी परवाह नहीं। मैं भी कहता हूँ कि मज़दूरसे आपकी तनख़्वाह कम है। मगर मज़दूर तो मज़दूरी करके पैसे लेता है। और आपसे समाज पूछता है कि बच्चोंको जो देना चाहिये, वह तो आप देते नहीं, फिर पैसे किस बातके माँगते हैं? समाज अिस तरहका सवाल न करने पाये, अितना रद्दोबदल करनेकी ताक़त आपमें होनी चाहिये। यह मुल्क बिलकुल भिखारी जैसा हो गया है। अिसके रास्ते देखो, दवाखाने, कुअें, तालाब — कोअी भी चीज़ देखो। अिस टूटे-फूटे, गअी-गुज़री हालतमें पड़े हुअे हिन्दुस्तानको हमें अुठाना है। आप लोग भी बुरी हालतमें हैं। अिसके लिअे आपको कोअी दोष नहीं देता। मगर आपको अेक जुदा दृष्टिकोण अख़्तियार करनेकी ज़रूरत है। अिसलिअे अगर आप लोग यहाँ आ गये हैं, तो सोचिये कि यह आश्रम क्या है? अिसका अितिहास क्या है? यहाँ कौन-कौन लोग रहते हैं? हिन्दुस्तानमें अैसा कौन आया, जिससे अिस देशके घर-घरमें चरखा दाखिल हुआ? भूली हुअी बातोंको ताज़ा किसने किया? आश्रममें रहनेवाले कौन हैं? वे कब यहाँ आये? अुन्होंने कॉलेज क्यों छोड़ा? आज़ादीकी लड़ाअियाँ हुअीं, अुनमें अुन्होंने क्या किया? जेलमें कितनी बार और क्यों गये? आसपास दूसरे कौन-कौनसे आश्रम हैं? वहाँ कौन आये और कौन गये? यह सब आप जान लें। सिर्फ़ सूत कातना तो आप अपनी बूढ़ी माँसे या किताबसे भी सीख सकते हैं। अिसलिअे अगर दिमागमें जगह खाली हो, तो अुसमें वह भावना भरिये, जो अिस अुद्योगके पीछे है।

मैं आपसे हड़ताल करनेका कारण नहीं पूछता। आपसे मैं क्या कहूँ? आपकी हड़तालकी कोअी क़दर नहीं करता। बम्बअीमें मोटर-बस और ट्रामकी हड़ताल हुअी। शहरके लोग जिन सवारियोंका अिस्तेमाल करते हैं, अुनके बिना अुन्हें बड़ी मुश्किल होती है। कअी बरसोंसे अेक ज़बरदस्त कम्पनी अिन्हें चला रही है। नफ़ा भी अच्छा कमाती है। अेक अंग्रेज़ अुसका मैनेजर है। अिसको अब हड़तालकी हवा लगी है। ड्राअिवरोंने संगठन किया है। अरे, पहले तो अैसा संगठन करने ही न देते थे। अैसा होनेसे पहले ही जेलमें ठूँस देते थे और नौकरीसे अलग कर देते थे। अब लोगोंके दिलसे यह सारा डर दूर हो गया है। हर आदमी समझने लगा है कि कांग्रेसकी सरकार है, अिसलिअे झख मारकर घर बैठे पैसे दे जायगी। यह बात अिस हद तक पहुँची है कि जो संस्था समाजके लिअे अुपयोगी है, अुसमें भी हड़तालकी हवा घुस गअी है। तार, डाक, रेलवे, ये कोअी खानगी व्योपार नहीं हैं। अिनमें अगर नफ़ा हो, तो वह लोगोंको मिलता है, यानी लोगोंपर टैक्सका बोझ कम होता है। अिनमें भी हड़ताल हो! यह बात ये लोग कैसे सीखे? अिसके दो कारण हैं। अेक तो जो शख़्स मेहनत मज़दूरी करता है, अुसे जितना मिलना चाहिये, अुतना नहीं मिलता। दूसरे रुपयेकी क़ीमत छह आनेके बराबर हो गअी है, क्योंकि अिसकी क़ीमत घट गअी है और अनाज व जीवनकी दूसरी ज़रूरी चीज़ोंकी क़ीमत बढ़ गअी है। लड़ाअीके ज़मानेमें सरकारने हिन्दुस्तानको अच्छी तरह लूटा। मज़दूरोंको अच्छे पैसे मिलने लगे। और पैसा यानी क्या? नासिकमें छपे हुअे नोट। नोटोंका फैलाव अब बढ़ गया, अिसलिअे सरकारने हज़ार रुपयेका नोट वापस खींच लिया। अैसी कअी तरक़ीबें कीं, मगर अिसका ठिकाना न लगा। लड़ाअीके बाद जो आर्थिक या माली खराबी पैदा हुअी है, वह अैसी-वैसी नहीं है। अिस वक़्त माली मुश्किलोंमें लोगोंको तकलीफ़ होती होगी, हड़तालियोंको भी होती होगी, हड़ताल करानेवालोंको तकलीफ़ थोड़े ही होनेवाली है!

पर सबसे अहम बात तो यह है कि अगर आसानीसे लोगोंका नेता बनना हो, तो हड़ताल करवा देनी चाहिये। जो बड़ी-से-बड़ी माँग पेश करावे, वह सबसे बड़ा नेता! मगर आपलोग कोअी मज़दूर नहीं हैं। आपके नेता शिक्षकोंमेंसे ही होने चाहियें। अुन्हें विचारसे काम लेना चाहिये। पाँच-दस-पन्द्रह रुपये ग्रेड बढ़ जाय, यह ठीक है, मगर सिर्फ़ यही हमारा मक़सद न होना चाहिये।

आपको अेक ही दिशामें अपना मगज़ नहीं चलाना है। खदानसे कोयला किस तरह निकाला जाय, लकड़ी कैसे जलाअी जाय, सिर्फ़ अितनाभर जान लेना ही आपके लिअे काफ़ी नहीं है। आपको तो बच्चोंके मगज़पर काम करना है। आपको लंबी नज़र रखनी है।

अिसका यह मतलब नहीं, कि आपको कोअी तक़लीफ़ ही नहीं है। मैंने तो आप लोगोंसे कहा था कि महीनेभर बाद प्रजाके नुमाअिन्दे आते हैं, अुन्हें अपनी तक़लीफ़ें कह सुनाओ, अुनकी हमदर्दी हासिल करो, हड़ताल क्यों करते हो? सीधा रास्ता छोड़कर आप अुल्टे रास्ते क्यों जाते हैं? वह पुरानी सरकार दो बरस बाद भी आपकी अेक दमड़ी तक नहीं बढ़ाती। बम्बअीमें मैंने हड़तालियोंसे कहा कि ये सब राज चलानेवाले मामूली लोग नहीं हैं। अगर अैसा हो, तो आपको ही राज न दे दिया जाय? ठीक हुआ कि ये लोग समझ गये और हड़ताल टूट गअी। मगर चार हफ़्तोंकी तनख़्वाह अब कौन देगा? आपको तो खेर साहब जैसे वज़ीरेआज़म मिल गये हैं। अुन्होंने आपको तनख़्वाह दे दी। मैं अगर शिक्षक होअूँ, तो कहूँ कि मुझे तनख़्वाह लेनेका हक़ नहीं है। मैंने पढ़ाया नहीं, तो पैसे कैसे लूँ?

पोस्टमैन हड़ताल करनेवाले थे, तब अुन्होंने मुझसे कहा कि तनख़्वाह दिलवाओ। मैंने जवाब दिया हड़ताल करनी हो, तो करो; तनख़्वाह नहीं मिलेगी। आपको समझना चाहिये कि यह समाज-व्यवस्था है, कोअी कारखाना नहीं, जिसमेंसे कुछ पैदा कर लिया जाय। समाजमें दरजा अेक क़ीमती चीज़ है। अिसलिअे आपको चाहिये कि अुसे हासिल करनेकी कोशिश करें।

मगर शिक्षकमें जो निज़ाम या डिसिप्लिनकी भावना थी, वह निकल गअी है। हड़तालका यही नतीजा हो सकता है। मिलवाले भी खूब चिल्लाते हैं कि जबसे हड़ताल हुअी है, मज़दूर लोग बराबर काम नहीं करते। हेरअेक हड़तालके अख़ीरमें निज़ामकी भावना टूटती जाती है। यह अेक क़िस्मकी बीमारी है। विलायतमें यह हाल नहीं है। यूरोप, अमेरिका सब जगह हड़ताल पड़ती है, मगर वहाँके लोगोंमें वफ़ादारीकी भावना है। वे लोग कुछ रोज़-रोज़ हड़ताल नहीं करते। कभी-कभी करते हैं, मगर व्यवस्थित तरीक़ेसे।

आज सरकारी व्यवस्थामें जो शिक्षक हैं, वे पहले शिक्षकोंसे चौथाअी काम करते हैं। सरकारने पाअि-कमीशन बैठाया है। वह अिस बातपर विचार करेगा कि किसे कितनी तनख़्वाह दी जाय। मगर यह तो करोड़ों रुपयोंका मामला हुआ। लड़ाअीमें सरकारने बहुतसे आदमी भर दिये हैं। अब लड़ाअी बन्द हुअी। मगर अुनको निकालनेकी बात न करो! अेक आदमीको निकाला कि हड़ताल की! अेक तरफ़ तनख़्वाह बढ़ानेकी माँग होती है और दूसरी तरफ़ यह होता है! ये पैसे क्या विलायतसे आयेंगे? हिन्दुस्तानमें लोगोंको अेक आदत पड़ गअी है कि अगर मनका-सा कुछ न हुआ, तो कहेंगे कि यह तो पूँजीवादी है। अगर कोअी हड़ताल होती है, तो कहते हैं कि कांग्रेस तो सरमायादारोंकी तरफ़दारी करती है। सरमायादार यहाँ कितने हैं? हिन्दुस्तानमें जितना बोझ पड़ता है, वह सब मामूली प्रजापर पड़ता है। सरमायादार तो बच जाते हैं और अुनको बचना आता है। चाहे जैसे वे अपना रास्ता निकाल लेते हैं। अिसलिअे सरकार चलानेवाले हमारे अपने मामूली आदमी ही हैं। अेक तो आप तनख़्वाह बढ़ानेकी माँग करें, दूसरे पहलेसे चार गुने आदमी रखने पड़ें और तिसपर 'गो स्लो' — काम कम करो — अिस नये सूत्रपर चलनेको कहें। यह तो सरकारी व्यवस्थाके हाथ-पाँव तोड़कर अुसे बेकार बनाना है। शायद आपके खयालमें अिसी तरह क्रान्ति होगी और नया निर्माण होगा! लोग डरते हैं कि अगर हड़तालके ख़िलाफ़ कुछ कहेंगे, तो लोगोंमें अप्रिय हो जायँगे। मगर जो आदमी अप्रिय कहता है, वह अप्रिय सुन भी सकता है। मैंने जो बात कही, वह सारे समाजमें फैली हुअी है।

आपकी हड़ताल तो ख़त्म हो गअी। अिस सबको भूल जाना चाहिये। अिस संगठनकी मेरे मनमें कोअी क़ीमत नहीं। अगर कुछ क़ीमत दिलायेगा, तो वह नेता दिलायेगा, जो कि समाज व शिक्षकपर असर डालेगा। अुसीको गुरु कहा जायगा। दो-चार रुपये तनख़्वाह बढ़वा देनेसे कोअी अैसा थोड़े ही बन सकता है? अिस तरह तो ट्रामवाले और मोटर-ड्राअिवर भी ले सकते हैं। बाकी तो आपको और सरकारको जैसे मौक़ूं लगेगा, वैसे थककर बन्दोबस्त करेंगे। अिसलिअे बम्बअीमें मैंने लोगोंसे कहा था कि आप ड्राअिवरोंके आगे झुकें, अिससे अच्छा तो यह होगा कि आप हुकूमत छोड़ दें। पन्द्रह सौ आंदमी बम्बअीपर क़ब्ज़ा करके बैठ जायँ, तो फिर रहा क्या? लोग हैरान हो जायँ, फिर सहन कैसे किया जा सकता है? आप शिक्षकोंसे मेरा यही कहना है कि आपलोग हड़तालको भूल जायँ। अुसके नतीजे बुरे होते हैं।

लड़कोंके माँ-बाप शिकायत करते हैं कि शिक्षक कुछ पढ़ाते नहीं हैं! अिसलिअे समाजमें आप लोगोंकी जो अिज़्ज़त पहले थी, वह फिरसे होनी चाहिये। जो शिक्षक भाअी-बहन यहाँ बैठे हुअे हैं, अुनसे मैंने अप्रिय बातें कही हैं। अगर आपको वे अप्रिय लगें, तो भी आप अुन्हें हज़म करनेकी कोशिश करें।

(गुजरातीसे)

नअी किताबें	मूल्य	डाकखर्च
जीवनका काव्य — हमारे त्योहारोंका परिमल (काका कालेलकर)	२–०–०	०–५–०
हमारी बा — अुनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२–०–०	०–६–०

www.vinoba.in

ट्रैक्टर और कीमियाअी खादें

[जनाब ज़हीर अे० अलीके नवम्बर, १९४६के "रूरल अिंडिया"में छपे अेक लेखका हिस्सा नीचे दिया जाता है, जो पढ़नेवालोंको दिलचस्प मालूम होगा। — वा० गो० दे०]

हिन्दुस्तानकी खेतीमें अब तक लकड़ीके हल और ढोरोंके गोबरकी खादका अुपयोग होता रहा है। . . . . सदियोंके अुपयोगसे अिनका कारगर होना साबित हो चुका है। अब साअिंसवालों और कारखानेवालोंने हमारे सामने लोहेके ढले हुअे हल और कीमियाअी खादें पेश करके हमें चौंधिया दिया है। अिन सबके बाद, सर्वशक्तिमान ट्रैक्टर भी हाज़िर हो गया है। . . . . .

लोहेका हल सात-आठ अिंच नीचेकी मिट्टी अूपर ले आता है। 'ह्यूमस' मिली हुअी अूपरकी मिट्टी बिना 'ह्यूमस'की नीचेकी मिट्टीके मिलनेसे हलकी हो जाती है। अिस नुक़सानको पूरा करनेके लिअे बनावटी खादें दी जाती हैं। मगर नष्ट हुअे 'ह्यूमस'को कमी सिर्फ़ वनस्पतियों और प्राणियोंसे बननेवाली खाद (कंपोस्ट) से ही पूरी हो सकती है। चूँकि आजकल ढोरोंके गोबरकी खाद कम हो गअी है, अिसलिअे मिट्टी खराब होती जाती है और आखिरकार फ़ायदेमंद खेतीके लिअे वह बेकार हो जाती है। अमेरिकामें बहुत बड़े पैमानेपर यही हुआ है। ट्रैक्टरसे १२से १४ अिंच तक गहरी ज़मीन जोती जाती है और खेती जल्दी और ज़्यादा होती है। मगर अब जानवर खेतोंसे ग़ायब हो गये हैं, अिसलिअे प्राणिज खाद कम मिलती है। अुसकी ज़रूरत किसी दूसरी खादसे पूरी नहीं हो सकती।

हिन्दुस्तानमें ट्रैक्टर और कीमियाअी खादोंका अुपयोग तेज़ीसे बढ़ रहा है। अुन्हें ज़्यादा तरक़्क़ी और खेतीके नये-से-नये तरीक़ोंकी निशानी माना जाता है। यह ख़तरनाक बात है। ट्रैक्टर और कीमियाअी खादके तुर्त-फुर्त नतीजे अितने लुभानेवाले होते हैं कि लोग अुनके बारेमें गहराअीसे नहीं सोचते। वे यह ख़्याल नहीं करते कि, कहीं यह सब भ्रम तो नहीं है।

हम ट्रैक्टरका अुपयोग करें या न करें, लेकिन अेक बात तय है कि मिट्टीकी अुपजाअू ताक़त क़ायम रखनेके लिअे आम तौरपर और बड़े पैमानेपर वनस्पतियों और ढोरोंसे बननेवाली खादका अुपयोग बिलकुल ज़रूरी है। वनस्पति, कचरे वग़ैराकी मिली हुअी खाद (कंपोस्ट)का तरीक़ा अब क़ायम हो गया है। मगर न तो अुसे लोग ठीक तरहसे समझते हैं और न काफ़ी बड़े पैमानेपर वह काममें ही लाअी जाती है। अगर राष्ट्रीय सरकार कंपोस्टके बारेमें प्रचार करे और यह अिन्तज़ाम कर दे कि किसान अुसे हासिल कर सकें, तो किसानोंकी सबसे बड़ी सेवा होगी। हमारे यहाँ बहुतसे पेड़-पौधे, जानवरोंका गोबर-पेशाब, खली और कअी क़िस्मकी लकड़ियाँ यों ही सड़ जाया करती हैं। कभी-कभी तो अिनसे हमें तक़लीफ़ भी होती है। अिन सब क़ीमती चीज़ोंको मिलाकर खाद बनाना चाहिये।

शहरोंके मैलेका भी अुपयोग म्युनिसिपैलिटियोंको करना चाहिये। बड़े शहरोंमें और अुनके आसपास दूध देनेवाली गायें होती हैं। अुनके गोबर वग़ैराका भी कंपोस्ट बनाना चाहिये। अिस तरह हम सिर्फ़ ज़्यादा अनाज ही नहीं, बल्कि ज़्यादा पोषक अनाज भी पैदा कर सकते हैं।

फिर हमारे बनावटी खाद बनानेवाले बड़े-बड़े कारखानोंका क्या होगा? अिन खादोंका थोड़ा-बहुत अुपयोग हमेशा ही होता रहेगा। मगर मेरा खाती खयाल यह है कि अगर लगातार और बड़े पैमानेपर अुनका अुपयोग किया गया, तो ज़मीनपर बहुत बुरा असर होगा। मिट्टीमें पैदा होनेवाले कीटाणुओंपर अुनका घातक असर होता है। तो, क्या यह कहना ठीक होगा कि खास ज़रूरतोंके लिअे वे अच्छी चीज़ें हैं, मगर पौधोंके रोज़ाना भोजनके लिअे नहीं? अिसके जवाबके लिअे सर आल्बर्ट होवार्डके नीचे लिखे शब्द ध्यान देने लायक़ हैं:

"ज़मीनके रोग बहुत ज़्यादा बढ़ गये हैं। किसान अिससे बड़ी फ़िक्रमें पड़ गये हैं। आम लोग अिस बुरी हालतसे

पूरे वाकिफ़ नहीं हैं। अगर खेतीकी सायन्सका यह नतीजा हो, तो अुससे कोअी बढ़ावा नहीं मिलता। पिछले ४०-५० बरससे ही, जबसे बनावटी खादोंका अिस्तेमाल किया जाने लगा है, ज़मीनकी बीमारियाँ बढ़ने लगी हैं।

"लाअिबिगने मिट्टीमें मिली हुअी चीज़ोंकी जो खोज की, अुसकी बदअमलीसे कीमियाअी खादोंका जन्म हुआ है। मशीनकी खोजके सबबसे किसानोंके सामने जो ज़ोरदार माँगें पेश हुअीं, अुनका भी यही नतीजा निकला।"

सारी दुनिया और, खासकर, अमेरिकाका यह तजरबा है कि गहरी जोताअी और बनावटी खादसे लाखों अेकड़ अच्छी ज़मीन बरबाद हो गअी है। 'ह्यूमस'का न होना ही हर जगह अुसका असल कारण रहा है। अपने देशमें हम पच्छिमी तरीक़ोंपर आगे बढ़नेकी कोशिशें अभी शुरू ही कर रहे हैं। आशा है कि हम पच्छिमके किसानोंकी की हुअी ग़लतियाँ नहीं दोहरायेंगे। हमें दूसरे देशोंके माफ़िक यह कहनेकी भी गुंजाअिश नहीं है कि हमारे पास जीवों वग़ैरासे पैदा होनेवाली काफ़ी चीज़ें नहीं हैं। हमारे पास प्राणिज पदार्थ जैसे-के-तैसे पड़े हैं। सिर्फ़ अुनका ठीक अिंतज़ाम करनेकी ज़रूरत है। हमें सरकारसे यह आशा करनी चाहिये कि वह अेक कारगर संगठन क़ायम करके कंपोस्ट (मिश्र खाद)का अिंतज़ाम करे। हमें यह भी आशा है कि वह तमाम खली, हड्डियों और खून, वग़ैराको, जिन्हें अभी बाहर भेज दिया जाता है, हमारे अुपयोगके लिअे हिन्दुस्तानमें ही रखेगी।

(अंग्रेज़ीसे)

हरिजनसेवक
४ मअी १९४७

पैदावार बढ़ानेकी बातें

कलकत्ताके मारवाड़ी चेम्बर ऑफ़ कॉमर्समें सरकी हैसियतसे की गअी सेठ बी० अेल० जालनकी तक़रीरमें दो फ़िक़रे बार-बार दोहराये गये हैं। अेक है—"पैदावार बढ़ाओ" और दूसरा है—"देशकी मामूली जनताके रहन-सहनमें सुधार करो।" अपनी-अपनी सहूलियतके मुताबिक़ लोग अिन दो फ़िक़रोंसे अवसर खेलते देखे जाते हैं। मैन्युफैक्चरर्स अेसोसिअेशन यानी कारखानेदारोंकी सभामें कुछ दिनों पहले पण्डित जवाहरलाल नेहरूने जो तक़रीर की थी, अुसमें भी अिनका बहुतायतसे अिस्तेमाल हुआ है। मगर ताज्जुबकी बात यह है कि आज तक किसीने अिनका मतलब नहीं समझाया। अिसलिअे जान पड़ता है कि ये शब्द महज़ नारे हैं, जो बेखबर लोगोंका ध्यान खींचने और बड़ी-बड़ी बातोंके भुलावेमें आ जानेवाली नासमझ जनताको समझानेके काममें लाये जाते हैं।

जिस मुल्कमें लोग भूखों मरते हों और अुन्हें तन ढँकनेको काफ़ी कपड़ा तक मयस्सर न होता हो, वहाँ अिन फ़िक़रोंका मतलब लोगोंको कम-से-कम ज़िन्दगीकी ज़रूरी चीज़ें यानी अनाज और कपड़ा मुहैया करना होना चाहिये। अिसलिअे हमें यह कोशिश करनी चाहिये कि आज जहाँ लोगोंको अेक बार भी खानेको नहीं मिलता, वहाँ अुनको दो बार पेटभर खाना मिल सके। साथ ही यह भी कोशीश होनी चाहिये कि आम जनता अपना शौक पूरा करनेके लिअे नहीं, तो कम-से-कम रितुओंसे—ठंड, गर्मी व बरसातसे—अपना बचाव करने लायक़ कपड़ा पा सके।

सेठ जालनका ध्यान जनताकी ज़रूरतें पूरी करनेके बजाय अपने कारखानोंकी तरक़्क़ी करनेकी तरफ़ ज़्यादा दिखाअी पड़ता है। क्योंकि अुन्होंने अपनी तक़रीरमें आगे जाकर कहा है कि "हिन्दुस्तानको अगर टिकाअू तरीक़ेपर अपने कारखानोंकी तरक़्क़ी करनी है, तो मेरी रायमें सरकारको अिस देशमें बना माल परदेस भेजनेकी नीति अख़्तियार करनी ही चाहिये, फिर हमें कुछ वक़्तके लिअे तंगी ही क्यों न भुगतनी पड़े।" अुन्होंने अपनी यह पक्की राय ज़ाहिर की है कि जब तक हिन्दुस्तानके कारखानोंमें बना माल परदेस नहीं भेजा जाता, तब तक अिस देशके अुद्योगीकरणकी बुनियाद पक्की नहीं हो सकती। सेठ जालनने सरकारसे सिफ़ारिश की है कि वह लॉर्ड केअिन्सकी बतलाअी हुअी 'पैदावार-प्रसार-नीति'के अुसूलपर चले, जिसका मतलब यह है कि "जितनी ज़्यादा रोटी आप खायेंगे, अुतनी ही बड़ी वह होती जायगी।" अुनका विश्वास है कि मरकज़ी सरकारके मालमंत्रीके समाजी मक़सद सिर्फ़ अैसी नीति अख़्तियार करनेसे ही पूरे हो सकते हैं। हमें खुशी है कि सेठ साहबने लॉर्ड केअिन्सको खुले तौरपर अपना गुरु स्वीकार किया है। और अुनकी यह अुम्मीद कि 'जितनी ज़्यादा रोटी खाओ, अुतनी ही वह बढ़ेगी,' हम जैसे मामूली अिनसानोंको चाहे जैसी अूटपटांग मालूम होती हो, मगर अिन नीम देवताओंके लिअे अुसे कर दिखाना आसान बात है; क्योंकि अिसमें कोअी शक नहीं, कि वे रोटी तो खाते हैं, मगर अपनी नहीं, औरोंकी। यह है अिस चमत्कारका भेद! सचमुच जब ये लोग सिर्फ़ दूसरोंकी रोटीसे अपना पेट भर लेते हैं, तो अुनकी रोटी तो हमेशा ही बचतमें रहेगी। मगर अैसे लोगोंका तरीक़ा अक्सर यह होता है कि जितना वे खा सकते हैं, अुससे कहीं ज़्यादा बड़ा टुकड़ा वे दूसरोंकी रोटीसे तोड़ लेते हैं और अिस तरह अुनकी रोटी अपने आप बढ़ जाती है।

पैदावार या बरबादी?

अपने अेक पिछले लेखमें हमने लिखा था कि बड़े पैमानेपर माल तैयार करनेवाले नये क़िस्मके कारखानोंका तरीक़ा तरक़्क़ीबख़्श नहीं है। हमने मिसाल देकर यह भी बतलाया था कि किस तरह वे निर्माणके बजाय नाशके लिअे ही सायन्सका अिस्तेमाल करते हैं। अिस बातको ध्यानमें रखकर ही 'पैदावार बढ़ाने'की बातोंकी जाँच करना ठीक होगा। जब हम चावलकी मिलोंमें पालिश किया हुआ चावल तैयार करते हैं, जो सेहतके लिअे नुक़सानदेह होता है, तो क्या हम अुसे पैदावार बढ़ाना कह सकते हैं? क्या यह किसान द्वारा अुपजाअी हुअी धानका नाश करना नहीं है? अिसी तरह जब शकरकी मिलें गन्नेके रससे सफ़ेद शकर तैयार करती हैं और अिस तरह अेक अैसी चीज़ हमें देती हैं, जो कम पोषक और गन्नेके सेहतमन्द रससे बहुत कम ताक़त देनेवाली होती है, तब भी क्या हमारा यह कहना ठीक होगा कि 'पैदावारमें बढ़ती' हुअी है? क्या यह क़ुदरतके तोहफ़ोंको बरबाद करनेकी ही अेक मिसाल नहीं है? क़ुदरतकी मौजूदा चीज़ोंमें बढ़ती तभी मानी जा सकती है, जब अिनसानकी कोशिशसे किसी चीज़की सिर्फ़ तादाद ही नहीं बल्कि अुसके गुण भी बढ़ें। जब किसान बीज बोता है और अपनी मेहनतके ज़रिये अुससे सौ गुने काटता है, तब हमारा यह कहना बिलकुल मौजूँ होगा कि अुसने पैदावार बढ़ाअी है। मगर जब हम मिलमालिकोंके कामोंपर नज़र डालते हैं और क़ुदरतके अुदार तोहफ़ोंसे अुनके द्वारा तैयार किये हुअे मालका मुक़ाबला करते हैं, तब हम सिर्फ़ यही कह सकते हैं कि अिनसानने मशीनोंका अिस्तेमाल पैदावारके लिअे नहीं, बल्कि बरबादीके लिअे किया है; और पैदावार बढ़ानेके लिअे तो बिलकुल ही नहीं किया।

फ़सलोंकी तब्दीली

बिहारमें और यू० पी० के बड़े-बड़े हिस्सोंमें हज़ारों अेकड़ ज़मीनमें गन्नेकी फ़सल बोअी जाती है। अिससे पहले यह ज़मीन बंजर नहीं थी। अगर यह ज़मीन बंजर होती, और गन्नेकी फ़सल अेडिशनल या ज़ायद होती, तो यह कहना ठीक होता कि पैदावारमें बढ़ती हुअी है। गन्नेकी खेती शुरू होनेसे पहले बिहारी किसान अपनी ज़मीनोंमें चावल बोते थे और हाथ-कुटे, सेहतमन्द चावल अिस्तेमाल करते थे, मगर अब फ़सलकी तब्दीलीकी वजहसे वे लोग अिन ज़मीनोंमें गन्ना बोते हैं। और, चावलके लिअे बरमाका मुँह ताकते हैं। बरमी चावल पालिश किया हुआ आता है—यानी

www.vinoba.in

अुसका सारा गिज़ाअीमाद्दा बरबाद हो चुका होता है। गन्नेकी फ़सलसे मिल-मालिकोंका बैंक-बेलेन्स चाहे जितना बढ़ता हो, मगर जब हम जनताके मुँहसे अुसका पैदा किया हुआ पोषक चावल छुड़ाकर उन्हें परदेसका पालिश किया हुआ और बेकस चावल देते हैं; तब क्या हम किसी भी दृष्टिकोणसे यह दावा कर सकते हैं कि हमने पैदावार बढ़ाअी है? खेतोंमें अनाजकी फ़सल पैदा करने के बदले मिलोंके लिअे कच्चा माल पैदा करना सिर्फ़ देश घातकताही नहीं, बल्कि जनताकी सेहतके लिअे नुक़सानदेह भी है। जब हम अनाजकी फ़सल बोनेके बजाय मिलोंके लिअे लम्बे रेशेवाला कपास और परदेस भेजनेके लिअे तम्बाकू और मूँगफली बोते हैं, तब अिसे 'पैदावार बढ़ाना' नहीं कहा जा सकता। अिसे पैदा करना नहीं बल्कि चोरी करना कह सकते हैं, देशमें पैदावार बढ़ानेकी जो बात कही जाती है, वह अिसी क़िस्मकी है और अिसकी वजहसे लोगोंको अपनी बुनियादी ज़रूरतें पूरी करनेमें भी बड़ी मुसीबतें अुठानी पड़ती हैं।

अिसी तरह मलाबारमें चावलके खेतोंको नारियलके कुंजोंमें बदल दिया गया है और अिनमें अिनसानके खानेके लिअे नहीं, बल्कि साबुनकी मिलोंको तेल पुरानेके लिअे नारियल पैदा किये जाते हैं। लोगोंसे अुनका चावल जैसा खास भोजन छुड़ाकर लक्स साबुन तैयार करना क्या पैदावारकी बढ़ती करना कहा जा सकता है, फिर वह साबुन चाहे जितनी बड़ी तादादमें और चाहे जितना सुन्दर क्यों न हो? जो मलाबारी लोग पहले .खुद चावल पैदा करते थे, अब अुन्हें ब्राज़िलका पालिश किया हुआ चावल दिया जाता है। अिस तरह देखा जाय, तो मिल मालिकोंकी कोशिशोंका सिर्फ़ यही नतीजा हुआ है कि जो लोग पहले अपना पैदा किया हुआ, बिना पालिशका सेहतबख़्श चावल खाते थे अुन्हें ब्राज़िलका पालिश किया हुआ चावल खाना पड़ता है और अुनके चावलके खेतोंमें साबुन बनानेके लिअे कच्चा माल पैदा किया जाता है। क्या यह पैदावारकी बढ़ती है? और क्या यही जनताकी रहन-सहनका दरजा अूँचा करनेकी कोशिश है? अिसपरसे हम यह अच्छी तरह देख सकते हैं कि मिल-मालिक अपने पासकी कुछ रोटी खा लेते हैं और फिर भी अुनकी रोटी छोटी होनेके बदले बड़ी होती जाती है! मगर अुनके अिस चमत्कारसे मामूली जनताकी क्या हालत होती है?

जब खेतोंमें खानेका अनाज पैदा करनेके बदले, जानबूझकर अैशो-आरामकी चीज़ें बनानेके लिअे कच्चा माल पैदा किया जाने लगा है, तो मुल्कमें अेकके बाद दूसरा अकाल पड़नेमें ताज्जुबकी बात क्या है? अगर हम सचमुच ही पैदावार बढ़ाना चाहते, तो हमारी अबतककी कोशिशोंके परिणाम-स्वरूप हमारी बुनियादी ज़रूरतें पहलेसे ज्यादा अच्छी तरह पूरी होतीं। मगर जब हम अपने आसपास नज़र डालते हैं, तो हमें सेठ जालनकी अिस बातकी ताअीद करनेवाले हालात दिखाअी पड़ते हैं कि "आज देश अनाजकी बेहद तंगीसे गुज़र रहा है। यह बदक़िस्मती है कि जिस हिन्दुस्तानका खास धन्धा खेती है, वहाँकी प्रजाको आज अपना पेट भरनेके लिअे दूसरे मुल्कोंके अनाजपर मुनहसिर रहना पड़ता है।" क्या यह आज ताज्जुब करनेकी बात है? अनजानमें ही सेठ जालनके मुँहसे यह सच बात निकल पड़ी है। अिस हक़ीक़तको हम झुठला नहीं सकते और न हम अिस नतीजेसे आँखें बन्द कर सकते कि जिस तरहकी कोशिशें हमने की हैं, अुनसे पैदावार घटी ही है।

रहन-सहनका दरजा

जिस देशमें बेकारी और रोज़गारकी कमीसे लोग तंग हों, वहाँ पैदावारके तरीक़े भी अैसे होने चाहियें, जिनसे यह बड़ा सवाल हल हो सके। 'पैदावार बढ़ाने' के जो तरीक़े हम अभीतक अख़्तियार करते रहे हैं, अुनसे हमेशा बेकारी बढ़ी ही है। पच्छिमी मुल्कोंमें जिसे मेहनत कम करनेकी तरक़ीब कहा जाता है अुसे मज़दूर कम करने या दूसरे शब्दोंमें बेकारी पैदा करनेकी तरक़ीबें कहना ज्यादा मौजूँ होगा। बड़े पैमानेपर माल तैयार करनेके तरीक़े अख़्तियार करके मिल-मालिकोंने जनताके रहन-सहनके दरजेको और नीचे गिराया है। हमारे अकाल अुन दिनों भी बारहमासी बन रहे हैं, जब क़ुदरतने अपनी दौलत — बरसात, धूप वगैरा — बाँटनेमें कोअी कसर नहीं रखी। क्या यह अिस बातका सबूत नहीं है कि रहन-सहनका दरजा अूँचा करनेकी अिन बड़ी-बड़ी बातोंके रहते हम प्रजाकी ज़िन्दगीका दरजा गिरा रहे हैं?

पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपनी यह अुम्मीद ज़ाहिर करते हैं कि "चालीस करोड़ जनताकी औद्योगिक तरक़्क़ी और आज़ादी अेक दूसरेसे जुड़ी हुअी चीज़ें हैं। अगर चालीस करोड़ जनताकी हालत बिगड़ती है, तो मुझे किसी क़िस्मकी औद्योगिक तरक़्क़ी नहीं चाहिये। अगर तरक़्क़ी होनी है, तो अुसका फ़ायदा सभी लोग लें, सिर्फ़ कुछ गिने-चुने आदमी ही नहीं। तरक़्क़ीके हमारे विचार अिस देशकी आम जनताको ध्यानमें रखकर ही किये जाने चाहियें।" हम पैदावार बढ़ानेके विषयमें अूपर लिखी बातोंपर पण्डितजीका ध्यान खींचना चाहते हैं और अुनसे अिसपर ग़ौर करनेकी प्रार्थना करते हैं कि बड़े पैमानेपर अिस्तेमालकी चीज़ें तैयार करके क्या हम अुस क़िस्मकी पैदावार बढ़ा सकते हैं, जिसकी अुन्होंने ताअीदकी है? साथही अिस दिशामें पहलेकी गअी हमारी कोशिशोंके परिणामस्वरूप देशको जिस बढ़ी हुअी मुसीबतका सामना करना पड़ा है, अुसका भी वे लेखा-जोखा लें।

जहाँतक पण्डितजी जनताको फ़ायदा पहुँचाना चाहते हैं और देशकी तरक़्क़ीके लिअे कोशिश करते हैं, वहाँतक हम अुनके साथ हैं। मगर हमारी अुनसे अर्ज़ है कि ये काम सायन्सी तरीक़ेसे किये जायँ, सिर्फ़ अिनेगिने लोगोंकी दौलत अिकट्ठा करनेकी लालचको पूरा करनेके लिअे नहीं। जहाँ तक हमने देखा है, सायन्सका अिस्तेमाल पैदावारके लिअे नहीं, बल्कि बरबादीके लिअे किया गया है। मरकज़ी सरकारके माल-मेम्बर माननीय लियाक़तअलीखानने समाजी-तरक़्क़ीका मक़सद सामने रखकर अेक माक़ूल प्रस्ताव रखा है और अपने साथी मेम्बरोंको बतलाया है किस तरह साहस बटोरकर जनताकी भलाअीके काम किये जा सकते हैं। हमें यक़ीन है कि अिस अगुआअीका असर पूरी अन्तरिम सरकार पर पड़े बिना न रहेगा।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी

१४-४-'४७

बाँकीपुर-मैदानमें आज शामकी प्रार्थनाके बाद गाँधीजीने कहा कि मुझे नोआखालीसे अशान्तिकी खबरें मिल रही हैं। सतीशबाबू और हरेनबाबू दोनोंने घटनाअें और आँकड़े देते हुअे, बड़ी तेज़ीसे दिनोंदिन खराब होनेवाली वहाँकी हालतसे मुझे वाक़िफ़ कराया है। मैंने जो कुछ सुना है, अगर वह सच निकला, तो शायद मुझे अुपवास करना पड़े; क्योंकि नोआखालीका काम अधूरा छोड़कर मेरे बिहार चले आनेसे मुझे नोआखालीके बुरे कामोंके लिअे अुपवास करनेका हक़ हासिल हो गया है। अिसका यह मतलब नहीं कि मेरा अुपवास निश्चित ही है। मगर मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि आपको अुसकी सम्भावनाका अिशारा कर दूँ।

मैं दिल्ली वाअिसरायसे मिलने गया था। वाअिसरायके साथ बहुतसी बातें हुअीं। अैसा लगता है कि वे साफ़ दिलके हैं। वे बार बार कहते रहे कि वे आख़िरी वाअिसराय हैं। अगले सालकी ३० जून तकके लिअे ही यहाँ हैं। मगर यह नहीं है कि ३० जून तक अुन्हें कुछ करना ही नहीं है। वे जानेकी तैयारी कर रहे हैं। मेरा खयाल है कि अुन्हें तो जाना ही है — चाहे हम लड़ते रहें या न लड़ें। यहाँ अेक सदीसे अूपर अुनका राज चला है। अुन्हींने हमें तालीम दी है, तो क्या हमने सिर्फ़ लड़ना ही सीखा है? अेक तरफ़से आज़ादी आ रही है और दूसरी तरफ़ हम लड़ते जा रहे हैं। दिल्लीमें काफ़ी बहस हुअी — पण्डितजी, राजाजी, वल्लभभाअी सब अिस बातकी कोशिश कर रहे हैं कि जो आज़ादी आ रही है, अुसे क़ायम रक्खा जाय मुल्कमें अमन-अमान रहे। और परदेसी राजकी जो बुराअियाँ थीं, वे निकल जायँ।

१५-४-'४७

आज शामको बाँकीपुर-मैदानमें गांधीजीने प्रार्थनाके बाद भाषण करते हुअे कहा — जब मैं दिल्लीमें था, तो मेरे पास बिहारसे कअी खत पहुँचे,

www.Vinoba.in

जिनमें काफ़ी गालियाँ भरी थीं। कुछमें तारीफ़ भी थी। कुछमें यह शक किया गया था कि क्या अब मैं बिहारका काम पूरा करनेके लिअे नहीं आअूँगा? क्या मैं बिहारको भूल गया हूँ? जिन्होंने शक किया वह ठीक नहीं था। जो आदमी अपने धर्मका पालन करता है अुससे ग़लती नहीं होती, और अुसको तारीफ़की भी कोअी ज़रूरत नहीं होती। धर्म तो फ़र्ज़ है। अेक रुपया लेकर सवा रुपया देना है।

जो लोग गालियाँ देते हैं, अुनकी गालियोंको सुनना ही चाहिये। गालियाँ मुझे छूती नहीं। मैंने कहा है कि "करूँ या मरूँ"। मुझे तो कहीं भी काम करते-करते मरना है। किसीने कहा है कि तुम तो मुसलमानके कहनेसे बिहार आये हो। तुम्हें किसी हिन्दूने नहीं बुलाया। मुसलमानोंने तो अिसलिअे नोआखालीसे बुला लिया कि वहाँके मुसलमान अपनी मनमानी कर सकें। पर आप लोग जानते हैं कि जिस मुसलमानने मुझे वहाँसे बुलाया, वह डॉक्टर महमूद हैं। डॉक्टर महमूद अेक क़ाबिल आदमी हैं और स्वर्गीय मज़हरुलहक़ साहबके दामाद हैं। अुन्होंने कांग्रेसकी बड़ी सेवा की है और कांग्रेस वर्किंग कमेटीके मेम्बर भी रहे हैं। अुनके ससुर मज़हरुलहक़ साहबको तो मैं तबसे जानता हूँ, जब ब्रजकिशोर बाबू और राजेन्द्र बाबूको भी नहीं जानता था। वे मेरे साथ अिंग्लैण्डमें पढ़ते थे। पहले पहल मैं राजकुमार शुक्लके कहनेसे बिहार आया। और चूँकि मज़हरुलहक़ साहब मुझे पहलेसे जानते थे, अिसलिअे यहाँ आनेसे मेरी क़ीमत बढ़ी। डॉ० महमूदको भी तभीसे जानता हूँ। तब हिन्दू-मुसलमानमें कोअी दुश्मनी नहीं थी, लेकिन अब हो गअी है। महमूद साहब मेरे दोस्त रहे हैं। अुन्होंने लिखा, तो मैं बिहार आ गया। मेरे ख़यालमें डॉक्टर महमूदने मुझे बिहार बुलाकर बिहारके हिन्दू और मुसलमान दोनोंका भला किया है। बिहार तो मेरा मुल्क है। अिसने मुझे बनाया है। मेरा यहाँ आना कोअी बड़ी बात नहीं। मैंने यहाँ काम किया है। अिसलिअे अिससे मुझे ममता हो गअी है। पर यह सात्विक-ममता (माँ की सी पाक मुहब्बत) है। जब कुछ भाअी कहते हैं कि मुसलमान मुझे यहाँ लाये, तो वे ठीक कहते हैं, पर यह कहना कि वे शैतान हैं और मुझे अिसलिअे नोआखालीसे लाये कि जिसमें वहाँ कुछ हो सके, तो यह निरी मूर्खता है। और फिर महमूद साहब, जिन्होंने अितना बड़ा काम किया है और जिनके समुरने मुल्ककी अितनी बड़ी ख़िदमतकी है; अैसा करेंगे, यह कैसे हो सकता है? सारी दुनिया में कितने मुसलमान हैं? क्या वे सब ख़राब हैं? अिस तरह मुसलमान भी कहेंगे कि जितने हिन्दू हैं वे सब ख़राब हैं। मैं कहता हूँ कि जब तक दुनियामें अेक आदमी भी भला है तब तक दुनिया भलोंकी है। अगर सब ख़राब हो जायँ तो सारी दुनिया शैतानकी हो जायगी। पर शैतान तो वह चीज़ है जिसकी कोअी हस्ती नहीं होती। असलमें बुराअीका नाम ही शैतान है। हम विचार करें तो हमें मालूम होगा कि दुनियामें अगर अेक आदमी भी भला हो, तो अुस अेकके तपसे ही दुनिया चलेगी।

जहाँ तक डॉक्टर महमूदका सवाल है, मैं तो अुनके घरहीमें रहता हूँ। अुनके घरमें यह समझा जाता है कि गांधीके जितने भी आदमी आयेंगे, वे सब हमारे हैं। महमूद साहबके सेक्रेटरी मुज़्तुबा साहब भी सब लोगोंका बहुत ख़याल रखते हैं और वे चाहते हैं कि मुझे किसीकी कोअी फ़िक्र न रहे। डॉक्टर महमूद तो आपके मिनिस्टर हैं। कय्यूम साहब भी आपके मिनिस्टर हैं। क्या ये सब निकम्मे हैं? अगर आपने अुन्हें पहचान लिया और आप समझते हैं कि वे कांग्रेसकी सेवा करनेवाले और सच्चे मुसलमान नहीं हैं, तो आप अुन्हें हटादें। पर अुनको तो आपके हिन्दू मिनिस्टरोंने ही रखा है। अगर अच्छे और अीमानदार मुसलमान न मिलें, तो हमें चाहिये कि हम अुनको न रखें, क्योंकि मिनिस्टरी मुसलमान मिनिस्टरोंके बग़ैर भी बन सकती है। लेकिन अगर हमको सच्चे मुसलमान मिलें और हम अुनको भी न लें, तो यह हमारी बदमाशी होगी। हम अच्छोंको लेकर चलें, अिसीमें हमारी शोभा है। मैं लीगवालोंसे भी मिला। वे भी कहते थे कि हम लीगी हैं, अिसलिअे ग़ैर-लीगी मुसलमान हमारे दुश्मन नहीं हो जाते। बिहार-मुस्लिम-लीगके प्रेसिडेण्ट ज़ाफर अिमाम साहब तो डॉक्टर महमूदके बड़े दोस्त हैं। बादशाह खान भी मुसलमान हैं। वे तो बिलकुल फ़क़ीर आदमी हैं और अुनके ख़ुदाअी ख़िदमतगार भी मुसलमान हैं। सरहदमें तो अितने कम हिन्दू हैं, जितने कम यहाँ मुसलमान भी नहीं। पर ख़ुदाअी ख़िदमतगारोंने सरहदमें हिन्दुओंकी पूरी हिफ़ाज़त की है।

बिहारका कर्त्तव्य

मुझको लोग जो कुछ लिखना चाहें, ज़रूर लिखें। लेकिन वे यह समझ लें कि अगर अेक बिहार सच्चा हो जाता है, तो अगर पंजाब, बंगाल और सिन्ध सभी बिगड़ जायँ, फिर भी हिन्दू-धर्मकी रक्षा हो जायगी। अगर पंजाब, सिन्ध और बंगालके मुसलमान हिन्दुओंको नुक़सान पहुँचाते हैं, तो भी अगर बिहार सच्ची बहादुरी दिखाता है, मुसलमानोंकी और अुनके बच्चोंकी हिफ़ाज़त करता है, अुन्हें आरामसे रखता है, तो बिहार हिन्दुस्तानको दुनियाकी नज़रमें अूँचा अुठा देगा।

छोटी तादादके लोगोंको हिफ़ाज़तसे रखना अुनकी ख़ुशामद नहीं है। बिहारकी मैंने सेवा की है, अिस नाते और बिहारी लोग रामके जैसे भक्त हैं, अुसको देखते हुअे बिहारसे मैं यही आशा करता हूँ। मेरा सिलसिला तो अैसा चला है कि गर्मीमें भी बाहर घूमूँ, पर डॉक्टर मना करते हैं। वे तो गर्मीमें मुझे ठण्डी जगह भेजना चाहते हैं। मेरा शरीर जितना साथ देगा, अुतना घूमूँगा। अिसलिअे अब दौरा कम होगा। पटनेमें भी बहुत काम पड़ा है। मैं यहाँसे जल्दी भागना नहीं चाहता।

और कअी बातें हैं, जो आपसे कहनी हैं। मैं कोशिश करूँगा कि कल या दूसरे दिन आपको सुना दूँ, क्योंकि वे बातें भी समझनेकी हैं।

१६-४-'४७

आज शामको बाँकीपुर मैदानमें प्रार्थनाके बाद भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा—

आज मैं आपलोगोंको अेक ख़बर दे सकता हूँ। मैं जब दिल्लीमें था, तो वाअिसराय साहबसे कअी बार मिला था। आते वक़्त भी अुनसे मिलकर आया। अुन्होंने अेक निवेदन (अपील) दिखलाया था और अुसपर मेरे दस्तख़त माँगे थे। मैंने कहा कि पण्डितजी और कांग्रेसके सदर कहें, तो मैं दस्तख़त देनेको तैयार हूँ। अुसमें क़ायदे-आज़म जिन्ना साहबके भी दस्तख़त होनेवाले थे। अुस निवेदनका मतलब यह था कि हम दोनों कहते हैं कि आज मुल्कमें जो गड़बड़ी और मारपीट चल रही है, अुससे हिन्दुस्तानके अच्छे नामकी नामूसी और बदनामी होती है। बेगुनाह लोगोंपर ज़ुल्म होता है और हर तरफ़ आतंक (दहशत) छाया रहता है। हमें यह नहीं देखना है कि पहला गुनाह किसका था और किसे भुगतना पड़ा। राजनैतिक या सियासी बातोंमें ज़बरदस्तीका अिस्तेमाल हमेशा निकम्मा होता है; अैसा नहीं होना चाहिये। हम अिसकी निन्दा करते हैं और हर क़ौमके लोगोंसे, चाहे अुनका धर्म कुछ भी हो, कहते हैं कि अिस तरहके गोल-माल न करें और जो लोग अैसा करने की कोशिश करें अुनको भी रोकें। अैसी चीज़ें लिखनी भी नहीं चाहियें, जिनसे लोगोंमें अिश्तेआल (अुत्तेजना) पैदा हो। अैसी चीज़पर मेरे दस्तख़त लेना कोअी बड़ी बात नहीं, क्योंकि मैं तो जबसे आया हूँ, यही कहता हूँ और हमेशा यही कहता रहा हूँ। लेकिन क़ायदे-आज़मने भी अिसपर दस्तख़त कर दिये हैं, यह बड़ी बात है। अब सबको ख़याल रखना है कि आगे दंगा न हो। वैसे तो आज भी दंगे हो जाते हैं। लेकिन अब हमें यह आशा रखनेका हक़ हो गया है कि आअिन्दा अैसे दंगे न होंगे। यहाँ लीगवाले भी पड़े हैं। वे मुझसे

www.vinoba.in

कहें कि यहाँ तुम्हारा काम नहीं रहा। अब तुम जा सकते हो और अपना काम कर सकते हो। मेरे दस्तख़त की ज़रूरत ही क्या थी? मैं किसीका प्रतिनिधि (नुमाअिन्दा) नहीं हूँ। मैं आपका नौकर हूँ, क्योंकि मैंने बिहार की नौकरी की है। आप कहिये कि अेक वार यहाँ वुराअी हो गअी है, मगर अब न होगी। आप पूछेंगे कि अिस अपीलपर नेहरूजी और कृपालानीजीके दस्तखत क्यों नहीं हैं? मैं अिसके अितिहास (तवारीख़) में नहीं जाना चाहता। लेकिन मेरे दस्तखत की क़ीमत तो आपको समझनी ही चाहिये। अब अगर आप किसी मुसलमान को मारेंगे तो यह बहुत बुरी बात होगी। अैसा न हो कि आप फिर गांधीकी जय कहकर बेगुनाहोंको मारें। वह तो जय नहीं, मेरी क्षय (खातमा) होगी। आप कहाँ तक मेरी क्षय करेंगे!

मैंने बड़ा बोझ ले लिया है। आप मेरी ज़िम्मेदारीको समझें और हिन्दू और मुसलमान हमेशा भाअी-भाअी की तरह रहें। मैं तो जिन्ना साहबकी तरफ़से भी दावा करना चाहता हूँ। वे आज सिर्फ़ मुसलमानों की तरफ़से बोलते हैं, लेकिन अेक वक़्त था जब वे हमारे मुल्कके नुमाअिन्दे समझे जाते थे। वे कांग्रेसमें थे और बहुत बड़े कांग्रेसी नेता थे। बम्बअी के गवर्नरसे अकेले बड़ी बहादुरीसे लड़े थे और अुनके मुक़ाबलेमें गवर्नरकी हार हुअी थी। आज भी बम्बअीमें अुनके नामका जिन्ना हॉल बना हुआ है। वे आज भी सबकी तरफ़से बोल सकते हैं, क्योंकि जो अपील की गअी है वह सब जमात के लोगोंके लिअे है।

वाअिसरायको भी धन्यवाद देना चाहिये। अुन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। लेकिन यह और भी अच्छा होता कि मैं और जिन्ना साहब मिलकर अपील तैयार करते और अुसपर अपने दस्तखत करते। अैसा होता तो यह बड़ी बात होती। लेकिन अभी तो वाअिसराय साहब तीसरे फरीक़ (पक्ष) की तरह हैं ही। अिसलिअे अुनको यह काम करना पड़ा है। अगर हम अिस बातको मानें, तो कितना अच्छा हो! हिन्दुस्तान कितना अूँचा अुठ जाय! अब हम सपनेमें भी एक दूसरे के ख़िलाफ़ कोअी बात न सोचें। अपने विचार, अपनी बात और अपने कामसे किसीको दुःख न पहुँचायें। अैसा न हो कि दुनिया हमपर थूके कि कहते क्या हो और करते क्या हो? आप मानें कि हमसे भूल हो गअी। और अब हम दीवाने नहीं बनेंगे।

१७-४-'४७

आज गांधीजी ६ बजकर ४५ मिनटपर प्रार्थना-सभामें आये। १५ मिनट देरसे आनेका कारण बताते हुअे गांधीजीने कहा कि चूँकि यह वक़्त नमाज़का होता है अिसलिअे मैंने सोचा कि १५ मिनट बाद ही प्रार्थना शुरू हो। अुन्होंने यह भी कहा कि मुसलमान भाअी चाहे यहाँ बहुत कम तादादमें आते हों, लेकिन हमें अुनके नमाज़का ख़याल रखना चाहिये। हमें सब धर्मोंकी अिज़्ज़त करनी चाहिये। प्रार्थनामें क़ुरानशरीफ़का कुछ हिस्सा भी पढ़ा जाता है। मैंने सुना है कि जब क़ुरानशरीफ़ पढ़ा जाता है, तब कुछ लड़के अुसकी हँसी अुड़ाते हैं। हमको किसीके धर्मकी हँसी न अुड़ानी चाहिये; नहीं तो लोग हमारे धर्मकी भी हँसी अुड़ायेंगे और अिससे झगड़ा पैदा होगा।

अिसके बाद प्रार्थना शुरू हुअी और प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा—

आज मुझसे चन्द मुसलमान भाअी मिले और अुन्होंने कुछ दुःख पहुँचानेवाले समाचार दिये। अुन्होंने कहा कि पटनासिटीमें जहाँ हिन्दुओंने मुसलमानोंको काफ़ी नुक़सान पहुँचाया है, हिन्दू अब भी अपने किये-पर नहीं पछताते और मुसलमानोंको डराते-धमकाते हैं। अैसा ही बिहारशरीफ़के बारेमें भी सुना। वहाँके हिन्दू भी मुसलमानोंको अिस तरह डराते-धमकाते हैं कि मुसलमान वहाँ जानेकी हिम्मत नहीं करते। मुझे यह सुनकर शर्म आअी और ताज्जुब भी हुआ कि अेक वक़्त बिहारके हिन्दू-मुसलमान भाअी-भाअीकी तरह रहते थे, लेकिन आज अेक दूसरेके दुश्मन बन गये हैं। दूसरी जगहोंसे भी शिकायतें आअी हैं। मैं मुंगेर व बिहारशरीफ़ नहीं जा सका। लेकिन मुझे अुम्मीद है कि मैं सब जगह जाअूँगा। मेरा शरीर कमज़ोर हो गया है। अेक वक़्त था, जब मैं अिन सब बातोंकी परवाह नहीं करता था, लेकिन आज तो मैं बूढ़ा हो गया हूँ। आप चाहें तो मुझे अिस तक़लीफ़से बचा सकते हैं। आप मेरी आवाज़ बिहारशरीफ़ तक पहुँचा सकें, तो हिन्दुओंसे कहिये कि बूढ़ेको कहाँ तक़लीफ़ देते हो! आप चाहें तो मेरा काम आसान हो सकता है। कुछ मुसलमानोंने कहा कि हमें राअिफलका लाअिसेन्स मिलना चाहिये। मैं तो चाहता हूँ कि किसीके पास भी राअिफल न रहे। बन्दूक शिकारके लिअे तो हो सकती है, मगर यहां तो किसी शेरका डर नहीं। आज तो राअिफल भी हिन्दू और मुसलमान अेक दूसरेको डराने या मारनेके लिअे चाहते हैं। अगर अच्छा अिन्तज़ाम हो, तो राअिफल या बन्दूककी कोअी ज़रूरत ही नहीं।

आज कुछ बड़े-बड़े हिन्दू ज़मींदार भी मुझसे मिले। अुनके बाद मुसलमान ज़मींदार भी आये। अुन्होंने जो बातें कीं, वे सब मैं आपको सुनाअूँगा। मैंने सुना है कि किसान और मज़दूर यह समझने लगे हैं कि हमारा राज हो गया है, अिसलिअे ज़मींदारको गालियाँ दे सकते हैं, अुनकी मालगुज़ारी दबा सकते हैं, और अुनको नुक़सान पहुँचा सकते हैं। अिसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। किसान अपने पैरोंमें ख़ुद कुल्हाड़ी मारते हैं, क्योंकि अगर थोड़ेसे ज़मींदारोंको अुन्होंने मार भी डाला, तो अिससे क्या होगा? मान लिया, कि ज़मींदार आज तक किसानोंको लूटते आये हैं, लेकिन अिसके ये मानी नहीं कि आज ताक़त हमारे हाथमें आ गअी है, तो हम ख़ुद ज़मींदारोंको लूटें। क्या अुनको हटाकर किसान अुनकी जगह ख़ुद बैठेंगे? हमको हर काम शराफ़तसे करना चाहिये। मारपीट करेंगे, तो फिर मारपीटका ही सिलसिला शुरू हो जायगा। फिर आप ही कहेंगे कि क्या यही रामराज्य है? अिससे अच्छे तो अंग्रेज़ थे, जिनके वक़्तमें हम आरामसे रहते थे। आज हमें वह आराम नहीं। मैं सब किसानों और मज़दूरोंको सुनाना चाहता हूँ कि वे अैसी कन्धाधुन्धी न करें। वे यह न समझें कि हम सब कुछ हैं।

१८-४-'४७

शामके वक़्त बाँकीपुर मैदानमें प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा—कल मेरे पास कुछ ज़मींदार आये थे। अुन्होंने कुछ शिकायतें की थीं। अेक शिकायत यह थी कि मज़दूर और किसान, ज़मींदारोंको ताराज करना चाहते हैं। मैंने अुसके बारेमें कल अितना ही कहा था कि यह ख़तरनाक बात है। अगर वे अैसा करते हैं, तो ख़ुद अपना ही नाश करेंगे। ज़मींदारोंका नाश तो छोटी बात है। जब किसानों और ज़मींदारोंमें अपनापन पैदा हो जाय, तब ज़मींदारोंका नाश करनेकी बात ही क्या है? ज़मींदार तो समन्दरमें अेक बूँदकी तरह हैं। अुनको ताराज करना बड़ी बात नहीं है। लेकिन अैसी ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये। महाभारतकी कथा है कि यादवोंका भी नाश हो गया; जब वे दूसरोंका नाश करनेवाले बन गये। वे शराब पी-पीकर आपसमें लड़ने लगे और लड़ते-लड़ते मिट गये। अिसी तरह अगर किसान-मज़दूर भी दूसरोंको बरबाद करनेकी बात सोचेंगे, तो ख़ुद अुनका नाश हो जायगा।

आज अेक भाअीने मुझसे कहा कि तुमको पता नहीं किसान-मज़दूर ज़बरदस्ती नहीं करते, बल्कि ज़मींदार अब भी ज़ुल्म करते हैं। मैंने कहा कि अगर ज़मींदार और पूँजीपति (सरमायादार) किसानों और मज़दूरोंको दबाते हैं और ज़बरदस्ती करते हैं, तो वे अपना नुक़सान ख़ुद करते हैं। अगर वे मालिक बनकर काम करना चाहते हैं, तो यह बननेवाली बात नहीं। अगर ट्रस्टी बनकर रहें तो काम बन सकता है।

अगर मज़दूरोंको अपना हक़ हासिल करना है, तो वे कैसे करें, यह मैंने चम्पारनमें बताया था। वहाँ निलहोंका राज था। अुनकी बस्ती अलग थी और अुनकी सड़कोंपर कोअी ग़रीब नहीं चल सकता था लेकिन मैंने देखा कि अुनका वह राज मिट गया। अुनको ताराज

www.vinoba.in

करनेके लिअे लोगोंने अुनका घर नहीं जलाया। अुनको मारा नहीं। सिर्फ़ काम करनेसे अिनकार कर दिया। आज भी मालिकोंको समयके साथ चलना चाहिये।

आज कुछ भाअी आये थे। अुन्होंने कहा कि हमपर ज़बरदस्ती 'प्यूनिटी टैक्स' लगाया गया है। प्यूनिटी टैक्स अुस जुरमानेको कहते हैं, जिसे सरकार किसी बस्ती या गाँव के सब लोगोंपर लगाती है। मान लीजिये कि हमने अपने गाँवमें तीन गुण्डे छिपा रखे हैं। गुण्डे बदमाशी करते हैं। वे गाँवके मुसलमान भाअियोंकी औरतों और बच्चोंको मारते हैं। सरकार हमको तो पकड़ नहीं सकती; क्योंकि हम तो सफ़ेदपोश होते हैं। और पकड़ भी ले, तो कोअी सबूत न होने के कारण अदालतसे हम छूट जाते हैं और गुण्डे भी हमारी मददके कारण गिरफ़्तार नहीं हो सकते। अिसलिअे सरकार सज़ाके तौरपर पूरे गाँवपर टैक्स लगा देती है। अगर हम कहें कि हमसे ग़लती हो गअी है, हम .खुद टैक्स दे देंगे, तो सरकार बेगुनाहोंपर टैक्स न लगाये। लेकिन हम तो सरकारको बतलाते ही नहीं कि किसने गाँव जलाया और किसने मारपीट की।

वे भाअी यह भी कहते थे कि जिन लोगोंने दंगेमें हिस्सा लिया, मुसलमानोंको मारा और अुनका नुक़सान किया वे अब तक पकड़े नहीं गये और अब भी आज़ादीसे घूम-फिर रहे हैं। हम अपने गाँव वापस कैसे जा सकते हैं? मैंने जहानाबादमें बता दिया था कि जिन लोगोंने नुक़सान किया हो, वे .खुद जाकर बरबाद होनेवाले घरोंको बनायें। मुसलमानोंके पास जाकर कहें कि हमसे ग़लती हुअी और हम अुसकी माफ़ी चाहते हैं। लेकिन अब हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम आपके सिपाही बनकर आपकी हिफ़ाज़त करेंगे। आप अपने घर चलिये।

१९-४-'४७

शामके वक़्त बाँकीपुर-मैदानमें प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा— मेरा अिरादा था कि आपको मेरे पास आये हुअे दो ख़तोंके बारेमें सुनाअूँ, पहला ख़त बिहार ही के अेक भाअीने लिखा है। अुन्होंने नाम तो लिखा है, मगर पता नहीं दिया। दूसरा ख़त पंजाबकी अेक बहनने लिखा है। दोनों ख़त दोस्ताना ढंगके हैं, लेकिन .गुस्सेमें लिखे गये हैं। अुनका अहिंसामें विश्वास नहीं रहा है। अुन्होंने मुझे सलाह दी है कि सेवासे कमाअी गअी अपनी शोहरतको बचानेके लिअे मैं सारे कामोंसे बिलकुल अलग हो जाअूँ। ये दोस्त अहिंसाकी अच्छाअियोंको नहीं जानते। मैं यह नहीं चाहता कि कुछ फ़ौजी या पुलिसके सिपाही आप लोगोंकी अिज़्ज़त बचायें। हर आदमी और औरतको अपनी अिज़्ज़तकी हिफ़ाज़त .खुद करनी चाहिये। अैसा तो सिर्फ़ अहिंसाके ही राजमें हो सकता है, और किसी तरह नहीं। मैं यह कहते कभी नहीं थकता कि अहिंसासे ही सबसे अूँचे क़िस्मकी बहादुरी दिखाअी जा सकती है।

आपने देखा है कि चम्पारनमें ग़रीब लोग कितनी मुसीबतमें थे। वहाँका राज चलानेवाले निलहे ग़रीबोंकी कोअी परवाह नहीं करते थे, लेकिन फिर किसानों और मज़दूरोंने जब अहिंसाके ज़रिये अुनके ज़ुर्मका मुक़ाबला किया, तो छह महीनोंमें ही निलहोंका राज मिट गया। बिहारवालोंको तो और कहीं जानेकी ज़रूरत ही नहीं, चम्पारनसे वे बहुत-कुछ सीख सकते हैं।

आजसे चार-पाँच दिनतक चरखा-संघ और नअी-तालीमी-संघकी मीटिंग होगी। आज चरखा-संघकी मीटिंगका पहला दिन है। मैं आपसे खादीके बारेमें कुछ कहना चाहता हूँ। मैं जेलमें था, तब ही स्वर्गवासी जमनालाल बजाजने खादीका काम शुरू किया था। अुन्होंने खादी-बोर्ड भी बनाया था। पहले कांग्रेसमें खादीको ही पहला दरजा दिया गया था, लेकिन फिर पार्लामेन्टरी प्रोग्रामको ख़ास दरजा दिया गया और तामीरी प्रोग्रामको दूसरा। खादी तामीरी-प्रोग्रामकी मध्यबिन्दु (मरकज़ी-नुक़्ता) बनी थी। पण्डित जवाहरलाल नेहरूने तो खादीके लिअे कहा है कि खादी हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी पोशाक है। हमारे झण्डेमें भी चरखा बना रहता है। जबसे कांग्रेसका झण्डा बना, तभीसे मैंने कहा था कि हम चरखेसे स्वराज लेंगे। कांग्रेसमें तो खादीको जगह मिली, लेकिन हमने अपने दिलमें अुसे वह जगह न दी, जो देनी चाहिये थी। आज खादीका काम बहुत तेज़ीसे चल रहा है और कअी करोड़ रुपये खादीकी बदौलत ग़रीब बहनों और भाअियोंमें बँटे जा चुके हैं।

खादी अहिंसाकी निशानी है। मनुष्य जैसा ख़ुद होता है, वैसा ही अपना देवता बना लेता है। अीश्वर तो मनुष्यको बनाता ही है, लेकिन मनुष्य भी अीश्वर को बनाता है। ख़ूनी आदमीके देवता ख़ून करते हैं। खादीको हमने अहिंसाकी निशानी बनानेके लिअे बहुत तपस्या की है। मैं चरखा-संघका सदर भी हूँ। पर मैं क़बूल करता हूँ कि अगरचे खादी के लिए बहुत काम किया गया है, लेकिन अभी बहुत काम बाक़ी है।

२०-४-'४७

शामके वक़्त बाँकीपुर मैदानमें प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा— कलकी तरह आज भी खादीके बारेमें आपसे कुछ कहूँगा। आज चरखा-संघकी दूसरी सभा थी। अगर मैं श्रीबाबूकी तरह आपका बड़ा वज़ीर होता और अपनी मर्ज़ीसे दूसरे वज़ीर रख सकता, तो मैं आपसे कह देता कि आपको मिलका कपड़ा बिलकुल नहीं मिलेगा। अपने कपड़े आप ख़ुद बनाअिये। अगर हमारे देशमें कपड़ा बुनने का काम तरक़्क़ी कर जाता, तो अुसका नतीजा यह होता कि हम सारी दुनियाको कपड़ा दे सकते। क्योंकि हमारा मुल्क बहुत बड़ा है। आज बिहारको पूरी आज़ादी दे दी गअी है। अिसका मतलब यह है कि विकेन्द्रीकरण (मरकज़ तोड़ना) हो गया है। चरखा-संघका काम लक्ष्मीबाबू और अुनके साथी करते हैं। अुनको यहाँके चरखा-संघका पूरा काम दे दिया गया है। वे चाहे जितना काम करें। श्रीबाबू और उनके साथियोंकी मदद लेकर वे काम करें, जिससे देहातोंमें खादी तैयार हो और वहींके लोगोंको पहननेको मिले।

आप पूछेंगे कि पटनाके लोगोंके लिअे फिर क्या होगा? पटनाके लिअे भी देहातवाले खादी दे सकते हैं। लेकिन वे न दें, तो भी आप चाहें, तो अपनी खादी .खुद तैयार कर सकते हैं। यहाँ बहुतसे स्कूल-कॉलेज हैं और अुनमें लड़के-लड़कियाँ पढ़ने जाते हैं। अगर सब लड़के स्कूल-कॉलेजमें घण्टा दो घण्टा कताअी-बुनाअीकी तालीम ही लें, तो थोड़े ही दिनोंमें वे सब काम अपने हाथसे कर सकते हैं। जो लोग नहीं पढ़ते, वे भी घरपर बेकार बैठनेके समय यदि घण्टा दो घण्टा खादी .बनानेका काम करें, तो ज़रूरतसे ज़्यादा खादी तैयार कर सकते हैं। खादी ज़बरदस्ती नहीं सिखाती। आप अगर .खुशीसे यह सब काम करने लगें, तो हर तरहका खद्दर तैयार कर सकते हैं।

मिलका सब सामान बाहरसे आता है। यहाँ तक कि मिलके चरखेका तकुआ भी यहाँ नहीं बनता। मिलके अेन्जिन तक बाहरसे आते हैं, लेकिन चरखेका सब सामान यहाँ बन सकता है। देहातोंमें खादी बुननेसे हर गाँव अपने पैरोंपर खड़ा हो सकता है और अपने खाने-पहननेका अिन्तज़ाम .खुद कर सकता है।

बिहारको चरखा-संघसे आज़ादी मिल गअी है। लक्ष्मी बाबू आपको बतायेंगे कि विकेन्द्रीकरण (मरकज तोड़ने) का काम कैसा होता है। अगर वे नाकाम हुअे, तो मैं अुनसे पूछूँगा कि क्या बिहारवाले सिर्फ़ लूटमार करना और दूसरोंको मारना ही जानते हैं? क्या वे कोअी अच्छा काम नहीं कर सकते?

('बिहार-समाचार' से)

विषय-सूची

		पृष्ठ
शिक्षकोंसे	... वल्लभभाअी पटेल	११३
ट्रैक्टर और कीमियाअी खादें	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	११५
पैदावार बढ़ानेकी बातें	... जे० सी० कुमारप्पा	११६
गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी	...	११७

www.vinoba.in